रिकॉर्ड :– किसने यह सब खेल रचाया... ॐ पिताश्री 19/1/63

किसने माना रचयिता ने यह खेल रचाया। अभी रचना हो रही है ना! समझने की बातें हैं ना! स्वर्ग अथवा आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना कर, बच्चों को फिर से मुक्ति–जीवनमुक्ति का वर्सा दे, इतना सब कुछ करके, फिर खुद छुप गया। अभी कर रहे हैं ना! सतयुग–त्रेता में बहुत आनंद में थे। कोई तकलीफ न थी। ..... बड़े ..... थे, फिर उनके ऊपर माया आकर छटकी। अर्थात् माया सर्वव्यापी हुई। बस। उसी माया कारण घोर अंधियारे में सो गए। तमोप्रधान होने से बड़े दुःखी बन जाते। दुनिया सरसों मिसल हो जाती। ढेर के ढेर हैं। इन सभी के शरीर मौत के घाणे में पीसकर, आत्माएँ वापिस जाती हैं। बच्चों को सुखधाम का मालिक बनाए, शंकर द्वारा सारी सृष्टि के मनुष्य मात्र को जड़जड़ीभूत तमोप्रधान शरीर से छुड़ाए, वापिस साथ ले जाते हैं। सतयुग की जीवनमुक्ति भारतवासियों को मिलती है। मच्छरों मिसल अभी वापिस जाने हैं। साजन सभी की ज्योत जगा रहे हैं। सब कुछ करके फिर खुद छुप जाता है। कोई भी जानते नहीं। नास्तिक बन जाते हैं। न मुझे, न मेरी रचना के आदि–मध्य–अन्त को जानते।

19/1/63

अभी बाप समझाते हैं– भक्तिमार्ग में भी तुम्हारी कामनाएँ अल्प काल लिए मैं पूर्ण करता हूँ। हरेक आत्मा को सतो–रजो–तमो में आना ही है। अन्त में सभी जीवात्माएँ तमोप्रधान हो जाती हैं। आदिदेव ब्रह्मा भी इस समय तमोप्रधान है, जिसमें मैं आकर, प्रवेश कर, पतितों को पावन बनाता हूँ। तुम बच्चों को सुख देकर मैं छुप जाता हूँ। फिर सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक, न मुझे, न मेरी रचना के आदि–मध्य–अन्त को कोई जानते। अभी तुम बच्चों को मालूम हुआ है– ऊँच ते ऊँच भगवत रचयिता एक है। ब्र०वि०शं० रचना हैं। ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर, सुख का सागर– यह एक की ही महिमा है। वो है ऊँच ते ऊँच, जिसको ही भगवन कहा जाता। और सभी भक्त हैं। सतयुग–त्रेता में कोई भक्त होता नहीं। भक्ति तब है जब भगवान को भूले हैं। वहाँ तो है ही प्रालब्ध। बाप कहते हैं– बच्चों को 21 जन्म की प्रालब्ध देता हूँ, फिर भक्ति रहती नहीं। तुम्हारी यात्रा है बुद्धि की। बाप कहते हैं, मनमनाभव। तुम सिकीलधे बच्चे ही पढ़ रहे हो। सारी दुनिया तो नहीं पढ़ेगी। यह कोई भी नहीं जानते कि परमपिता प० की यह भारत बर्थ प्लेस है। सर्वव्यापी के ज्ञान (से) बर्थ प्लेस आदि कुछ समझ में नहीं आता। शिवबाबा कहते हैं– भारत मेरा बर्थ प्लेस है। क्या तुम सोमनाथ के मंदिर को भूल गए हो? जिन्होंने ऐसा मंदिर बनाया वो कितने मालामाल होंगे! कहते हैं– बच्चों की अल्प काल के लिए सर्व कामना पूरी करता हूँ। मनोकामना पूरी करने लिए मैं सा० कराता हूँ। ऐसे नहीं कि वो मेरे से मिलते हैं। मुक्ति–जीवनमुक्ति नहीं मिलती। सा० हुआ, बस खुशी हुई– भगवान मिल गया। भक्तिमार्ग में यह सर्विस करके, फिर इस संगमयुग पर आकर तुम बच्चों को मदद करते हैं। तुम बच्चों को जीवनमुक्ति दे फिर मैं निर्वाणधाम में बैठ जाता हूँ। अभी आकर सभी राज़ समझाता हूँ। ब्राह्मण ही यह सहजयोग और सहजज्ञान सीखते हैं। इनसे तुम सदा सुखी, स्वर्ग के मालिक बन जाते हो। फिर ज्ञान की दरकार नहीं रहती। ऐसा कोई है क्या, जो कहे कि हम राजाओं का राजा बनावेंगे? यह बाप का ही काम है। बाकी शास्त्रों से मेरी प्राप्ति नहीं होती। यह शास्त्र तो तुमको मेरे से बेमुख करते हैं। अभी मैं आया हूँ तुमको श्रीमत देने। इस बाबा को भी मत देने वाला वो है। यह बाबा भी ब्राह्मण है– यह थोड़े ही कोई को पता है। यह ब्रह्मा अभी ब्राह्मण है। देवता तब कहलावे जब सम्पूर्ण हो जाय। ब्राह्मण कोई सूक्ष्मवतनवासी नहीं। ब्राह्मण यह है, जो ब्रह्मा मुखकमल से रचे गए हैं। यह ब्रह्मा तो मनुष्य है। यह मृत्युलोक में है। कलियुग मृत्युलोक के बाद है अमरलोक। वहाँ आदि–मध्य–अन्त दुःख नहीं होता। माया रावण के राज्य में आदि–मध्य–अन्त दुःख मिलता है। यहाँ तुम हो, ब्रह्मा मुखवंशावली सभी ब्राह्मण–ब्राह्मणियाँ। मम्मा जगदम्बा–सरस्वती, उनको कहा जाता है ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मणी। देवी नहीं कहेंगे। यह वर्ण है– जगदम्बा ब्राह्मणी। फिर देवता श्री लक्ष्मी बननी है। कितना साफ समझाते हैं। यह ज्ञान फिर कब होता ही नहीं है। गीता तो प्रायःलोप हो जाती है। फिर भारत के धर्मशास्त्र कौन–से हैं? पहले है– आदि सनातन देवी–देवता धर्म की, भगवान की गाई हुई– गीता। फिर जो–2 धर्म स्थापन करते हैं– इस्लामी, बौद्धी, फिर उनके शास्त्र निकलते हैं। यह है मु(ख्य) धर्मशास्त्र। बाकी वेद–उपनिषद आदि किस धर्म के शास्त्र हैं? ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय– तीनों धर्मों का शास्त्र एक ही गीता है, जो अभी ब्रह्मा मुख द्वारा सुना रहे हैं। फिर कोई शास्त्र रहता नहीं। गीता प्रायःलोप हो जाती है। फिर इस्लामी, बौद्धी आदि आवेंगे। यह हैं मु(ख्य) 4 धर्म, जिन्हों से ही फिर वृद्धि होती है। मु(ख्य) है गीता। इसलिए गाया हुआ है– सर्वशास्त्रमई शिरोमणि गीता। शिरोमणि वेद–पुराण नहीं कहा जाता है। शिवबाबा आकर गीता सुनाते हैं, फिर शिव पुराण कहाँ से आया! यह सभी हैं दन्त–कथाएँ। ड्रामा में इन सभी शास्त्रों आदि की भी नूँध है। यह फिर भी होंगे। बाप कहते हैं– मैं करन–करावनहार हूँ। मेरा सिर्फ़ शिव नाम भी नहीं रखो। त्रिमूर्ति शिव कहना ठीक है। मैं तीनों साथ आता हूँ। पहले सिर्फ़ सूक्ष्मवतन रचना पड़े; इसलिए नाम पड़ा है त्रिमूर्ति शिव। ब्र०वि०शं० को रचने वाला– शिव। मनुष्य नास्तिक होने कारण त्रिमूर्ति ब्रह्मा कह दिया है। होना चाहिए त्रिमूर्ति शिव। फिर शिव से रची हुई पहले सूक्ष्म सृष्टि, पीछे फिर चाहिए ब्रह्मा। ब्रह्मा मुख

19/1/63

कमल से ब्राह्मण धर्म, उनको बैठ गीता सुनाते हैं। तुम ब्रह्मा मुखवंशावली हो। फिर तुम ही देवता वर्ण में आवेंगे। अब तुमको शूद्र वर्ण से बदल लिया है। अब तुम मेरे बने हो। बेहद के बाप को अपना बनाया है। तुम बच्चे हो, वो डाडा है निराकार सभी का और यह ब्रह्मा बाबा भी सभी का है। हरेक शिववंशी ब्रह्माकुमार–ब्रह्माकुमारी हैं ही। आत्मा तो अनादि इमॉर्टल है। बाकी शरीर मॉर्टल है, बदलते जावेंगे। आत्मा बदलती नहीं। आत्मा में खाद पड़ती है; जैसे सोने में खाद पड़ती है। पहले गोल्ड 24 कैरेट था, फिर 21–22 कैरेट। इस समय तो तमोप्रधान मुलमा हो पड़े हैं। गवर्मेन्ट भी कहती है– सच्चा सोना पहनने का(के) तुम लायक नहीं हो, 14 कैरेट पहनो। कल फिर कहेंगे– 9 कैरेट पहनो। 9 कैरेट होते हैं सबसे (कम)ती। तो तुम सच्ची–2 ब्राह्मणियाँ हो। भ्रमरी का मिसाल सन्यासी लोग देते हैं। भ्रमरी कीड़े को घर में लाए भूँ–2 कर, आपसमान उड़ने लायक बनाते हैं। यह भ्रमरी का मिसाल तुम्हारा है। तुम ब्राह्मण–ब्राह्मणियाँ क्या करते हो? विष्टा के कीड़ों को अपन पास मँगाए, ज्ञान की भूँ–2 करते–2, तुम शूद्र को ब्राह्मण बनाए, ज्ञान परी बना देती हो। कब्रिस्तान से निकाल उनको परिस्तान का लायक बना रहे हो। अभी सभी विष्टा के कीड़े हैं ना! गुरूनानक ने भी कहा है ना– मूत पलिती कपड़ धोए। यह ज्ञान की वर्षा है, जि(स)से सारी दुनिया पतित से पावन बन जाते(ती) हैं। क्या यह विद्वान–पण्डित पतित को पावन बनावेंगे? यह समझ की बात है ना! बाप कहते हैं– तुमने अनेक शास्त्र पढ़े, जन्म–जन्मांतर करते आए, फिर कोई सद्गति में गया है क्या? यह सभी गपोड़े लगाए हैं कि फलाणा पार निर्वाण (गया)। यह सभी हैं नॉनसेन्स बातें। बाप तो बच्चों को कहेगा ना– तुम तो घोर अंधियारे में पड़े हो। क(हते हैं)– ईश्वर सर्वव्यापी है। मुझे सर्वव्यापी कह, जन्म–मरण में ले आए हो। माया ने ही तुमको संश(य) ..... दिया है। यह नॉलेज कल्प आगे भी तुम बच्चों को मिली थी। सतयुग में यह नॉलेज होती नहीं। (बाबा ने) संगम पर आस्तिक बनाए 21 जन्मों का वर्सा दे दिया। फिर नालेज की दरकार नहीं रहती। ऐसे नहीं कि यह नॉलेज परम्परा से चलती है। हाँ, इस्लामी–बौद्धियों की नॉलेज परम्परा से चलती आती है। एक/दो से सुनाते रहते हैं। बाकी यह ज्ञान तो प्रायःलोप हो जाता है। बाबा कहते हैं– यह सभी भक्तिमार्ग की अथाह सामग्री है। ज्ञान तो बिल्कुल सहज है। बुद्धि में आता है ना– बीज और झाड़। इनको वैरायटी धर्मों का झाड़ कहा जाता है। बीज एक ही है। एक ही सृष्टि है। आत्मा तमोप्रधान बनती तो सभी पतित, तमोप्रधान बन पड़ते हैं। सतयुग में सभी सतोप्रधान होता है। ऐसे नहीं कि पतित दुनिया को कोई मनुष्य सतोप्रधान बना सकता है। नहीं, यह प० ही कर सकते हैं। कहते हैं, मनुष्य जीवन अमूल्य है। सो सिर्फ़ यह एक जीवन है, जि(स)से तुम हीरे जैसा बनते हो। इस जीवन में तुम स्वर्ग के मालिक बन सकते हो। पढ़ाने वाला है– बाप। भगवानुवाच्य– मैं तुम बच्चों को सहजयोग सिखलाता हूँ। इसमें तकलीफ़ की कोई बात ही नहीं। वो तो सिर्फ़ शास्त्र सुनाते जाते हैं, उसको कहा जाता है– कछ में कुरम। यह तो है बुद्धि का ज्ञान। तुमसे कोई पूछे– कहाँ जाते हो? तो तुम कहेंगे– हम जाते हैं, गॉडली यूनिवर्सिटी में। अरे, तुम्हारे पास किताब आदि तो कुछ भी है नहीं, वण्डरफुल यूनिवर्सिटी है! बूढ़ियाँ भी कहती हैं– हम पढ़ने जाती हैं। गॉड पढ़ाते हैं, जि(स)से हम सतयुग में राजाओं का राजा बनते हैं। कितनी सहज बात है। फिर भी कोई कहे– बुद्धि में नहीं आता, तो वण्डर है ना! शास्त्रों का भूसा बुद्धि से निकलता नहीं है। इस(बाबा) का भूसा निकल गया। बाबा ने कहा– यह सभी शास्त्रों का भूसा निकालो, अभी मेरा सुनो। भूसे की कोई वैल्यू नहीं होती है। तुम्हारी यह जीवन तो मोस्ट वैल्युएबुल है। अभी पुरुषार्थ कर वैकुण्ठ का मालिक बने सो बने, नहीं तो कदा(चित) नहीं बनेंगे। नो और नेवर।

19/1/63

बाबा कितना समझाते हैं। कछुए का मिसाल भी यहाँ का है। जैसे वो खा–पीकर, फिर अन्तर्मुख हो जाता है, तुमको भी सदैव अन्तर्मुख रहना है। बाबा ने कल भी समझाया– तुम योग लगाए भोजन खाने शुरू कर लेते हो। बस, एक गिट्टी पर याद किया, फिर तो शिवबाबा को भूल, खाने में लग जाते हो। तुमको ऐसा तो कहा नहीं गया है– सिर्फ़ एक गिट्टी पर शिवबाबा को याद करो। तुमको तो कहते हैं– सिमर–2 सुख पाओ..... कोई माला नहीं सिमरनी है, शिवबाबा को याद करना है। मुझे याद करो तो कल(ह)–क्लेश मिटे सभी तन के। फिर जीवनमुक्त पद पाओ। 21 जन्म तुमको कभी शारीरिक रोग न होंगे। वो है निरोगी दुनिया। यह है रोगी दुनिया। ल०ना० देखो कैसे हर्षितमुख होते हैं! देखने से ही दिल खुश हो जाती है। ल०ना० भारत के पूज्य थे ना! शिवबाबा कहते– मैं एवर पूज्य हूँ। वास्तव में एवर भी (न)हीं कह सकते; क्योंकि सतयुग–त्रेता में तो मुझे कोई याद ही नहीं करते। बच्चों को सुख दे ... मैं तो वानप्रस्थ में चला जाता हूँ। भारत में गाया भी जाता है– दुःख में सिमरण सब करे, सुख में करे न कोई। मैं तुमको सुखधाम ले जाता हूँ, फिर तुमको याद करने की दरकार नहीं रहती। तुम्हारी सभी मनोकामना पूरी कर देता हूँ। वहाँ तो अथाह सुख (रह)ता है बेहद का। सोमनाथ मंदिर को 2500 बरस हुए होंगे। 5000 बरस से पुरानी चीज़ कोई होती (नहीं)। देवी–देवताओं के आगे क्या था? कलियुग। उनमें अनेक धर्म थे। अभी देखो कितने धर्म हैं! (देवी)–देवता धर्म तो प्रायःलोप है। अभी फिर तुम बच्चों की ज्योत जगाए, गुल–2 बनाए, नालायक से (तुमको) लायक बनाते हैं। माया ने नालायक बनाया है। नालायक आदमी दिवाला निकालते हैं। बाबा (कहते) हैं– तुमको कितना मालामाल किया था। यह खेल है। नर्क स्वर्ग, हेल हेविन यह चक्कर .... रहने वाले आए देश पराए। बाप कहते हैं– यह कोई मेरा धाम नहीं है। यह तो रावण की दुनिया अथवा रावण का धाम है। रावण के धाम में मुझे ज़रूर आना पड़े। प्लेग की बीमारी पड़ती है, तो डॉक्टर को ज़रूर प्लेगी के पास जाना पड़े शफ़ा देने लिए। मैं भी पतितों के पास आता हूँ। नम्बर वन पावन और नम्बर वन पतित भारत ही बना है।

बाप समझाते हैं– यह नॉलेज सिर्फ़ ब्राह्मणों को ही मिलती है। गीत में कहा ना– अखपन नूर समाया। तुम बच्चे इस ड्रामा को जान कितने हर्षित होते हो! ड्रामा को देख अपन हर्षित होते हैं– वाह! वण्डरफुल ड्रामा है! बाबा भी हर्षित होता है ना! बाबा कहते हैं, समझाते तो बहुत हैं, फिर भी कहते हैं– मनमनाभव। यह है सच्चा मंत्र। मैं सच कहता हूँ। सच्चा ज्ञान सुनाता हूँ। मेरे को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। सभी पतित आत्मा हैं। एक भी पुण्यात्मा नहीं। कहते हैं– बाबा, हमें इतने ऋषि, मुनि, साधु–सन्त हैं। अरे, यह तो सभी पाप धोने कुम्भ के मेले पर जाते हैं। वास्तव में तो सच्चा–2 कुम्भ का मेला तो यह है जबकि आत्माओं और प० बाप का मिलन होता है। यहाँ तुम्हारे पाप नाश होंगे। वहाँ तो जन्म–जन्मांतर जाते रहे, हुआ कुछ भी नहीं। सच्चा–2 कुम्भ का मेला यह है। आत्मा प० अलग रहे बहुकाल..... सतगुरु ही पावन करते हैं। इतनी सहज बात भी किसकी बुद्धि में नहीं आती है। वण्डर है ना! तुम कितने लाडले बच्चे हो! तुम सभी बच्चों का बेहद का बाप एक ही है। जो भी सभी शास्त्र हैं, सभी ग्लानि के हैं। सभी की ग्लानि करते रहते हैं। कहते हैं– सर्वव्यापी ईश्वर है, पत्ते–2 में भगवान है। भगवान की ही तीक निकाल दी है। यह खेल को समझना है। विष्टा के कीड़ों को ज्ञान की भूँ–2 कर परिस्तान का मालिक बनाना है। मोस्ट बिलवेड बाबा मोस्ट बिलवेड ल०ना० जैसा बनाते हैं। जादूगर है ना! ॐ